

डॉ. रॉबर्ट वानॉय, किंग्स, व्याख्यान 4

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय, डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्डेब्रांट

टेक्स्ट ऑफ किंग्स, ड्यूटेरोनोमिस्टिक हिस्ट्री, प्रमुख महत्व

मैसोरेटिक टेक्स्ट (एमटी) और सेप्टुआजेंट (एलएक्सएक्स) में राजाओं का पाठ

ठीक है, आइए फिर पाठ अनुभाग को देखें, और फिर जो मैंने अभी प्रसारित किया है हम श्लोक 15 से शुरू करेंगे और आगे बढ़ेंगे। अब जहां तक मैंने इसे हैंडआउट्स पर रखा है, यह सारी सामग्री केवल परिचयात्मक प्रकार की चीजें हैं। याद रखें कि पिछले सप्ताह हमने नाम, सामान्य सामग्री, पुस्तक की संरचना, लेखकत्व, स्रोत, रचना की उम्र पर चर्चा की थी, और फिर पृष्ठ 13 पर हम "पाठ" पर आते हैं। तो आइए पहले पाठ अनुभाग को देखें, और फिर हम नए हैंडआउट पर आगे बढ़ेंगे। आरके हैरिसन के *पुराने नियम के परिचय* में कहा गया है कि राजाओं के हिब्रू पाठ में कई भ्रष्टाचार हैं, और पुनर्निर्माण के प्रयोजनों के लिए, सेप्टुआजेंट संस्करण एक अमूल्य सहायता है। यह मैसोरेटिक पाठ से छोटा है और अधिक विश्वसनीय भिन्नताओं को संरक्षित करने के लिए सोचा गया है। सामान्य तौर पर, LXX हिब्रू के अब प्रचलित रूप की तुलना में अधिक शुद्ध रूप पर आधारित है। कुमारन की गुफाओं से राजाओं की पुस्तकों के टुकड़े बरामद किए गए थे और वे इस दृष्टिकोण का समर्थन करते प्रतीत होते हैं कि एक बार वहां एक हिब्रू पाठ मौजूद था जो कि, अधिकांश भाग के लिए, मैसोरेटिक पाठ में अंतर्निहित सेप्टुआजेंट की तुलना में करीब था, और जो कि कुछ उदाहरण, दोनों से बेहतर हैं।

उदाहरण के लिए, ऐसा प्रतीत होता है कि राज्य के विघटन का दूसरा विवरण सेप्टुआजेंट संस्करण के 1 राजा 12:24 के बाद प्रक्षेपित किया गया था। इसने सुलैमान की मृत्यु और रेहोबाम के शासनकाल से जुड़ी घटनाओं का वर्णन किया और 1 राजा 11 और 12 की सामग्री की कुछ पुनरावृत्ति के साथ यारोबाम के विद्रोह का विवरण प्रस्तुत किया। स्वीट बताता है कि यह प्रक्षेप विघटन का दूसरा और विशिष्ट प्रतिरूपण है। कहानी, हिब्रू मूल पर पहली कहानी के समान ही आधारित है। इस विशेष विवरण का मूल्य चाहे जो भी हो, इसमें कोई संदेह नहीं है कि सेप्टुआजेंट और कभी-कभी इसका लूसियन संस्करण, किंग्स की पुस्तक के पाठ्य अध्ययन के लिए अपरिहार्य है।

अब यह काफी तकनीकी सामग्री है। मैं किंग्स के पाठ की चर्चा में नहीं पड़ना चाहता। राजाओं का पाठ कुछ मायनों में सैमुअल के पाठ के समान है; यह बहुत जटिल है क्योंकि स्पष्ट रूप से, प्रसारण के दौरान, कुछ त्रुटियाँ हैं जो पाठ में आ गई हैं। यह भी बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है कि जहां तक पृष्ठभूमि की बात है तो सेप्टुआजेंट एक अलग हिब्रू परंपरा पर आधारित है, और वर्तमान हिब्रू पाठ मैसोरेटिक पाठ पर आधारित है, इसलिए जहां तक पाठ्य मामलों की बात है तो अंतर के बिंदुओं की तुलना करना एक अत्यधिक तकनीकी मामला बन जाता है। यह एक जटिल मामला है, और मुझे लगता है कि ज्यादातर मामलों में बहुत अनिश्चितता है कि क्या किसी दिए गए मामले में आप मैसोरेटिक रीडिंग की तुलना में सेप्टुआजेंट रीडिंग को प्राथमिकता देते हैं। हमें यह गलत धारणा नहीं बनानी चाहिए कि किंग्स का पाठ कुछ ऐसा है जो पूरी तरह से अविश्वसनीय है। मैं कहूंगा कि ये अंतर आम तौर पर मामूली बिंदु होते हैं जो पाठ की किसी भी ठोस समझ को प्रभावित नहीं करते हैं। कुछ मामलों में, उदाहरण के लिए, आपके पास एक लेख और कुछ हिब्रू पाठ के साथ एक संज्ञा होगी लेकिन सेप्टुआजेंट में लेख के बिना। तो बहुत सारे भिन्नताएं उस प्रकार की बहुत छोटी चीजें हैं, लेकिन मतभेद हैं, और ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ मामलों में सेप्टुआजेंट एक बेहतर रीडिंग को संरक्षित कर सकता है।

जबकि हैरिसन, यहां जारी रखते हुए, आम तौर पर राजाओं के पाठ्य अध्ययन में सेप्टुआजेंट की एक महत्वपूर्ण भूमिका बताने में निस्संदेह सही है, एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें ऐसा प्रतीत होता है कि यह लागू नहीं होता है, अर्थात् कालक्रम। लंबे समय से यह सोचा जाता था कि राजाओं का कालक्रम पूरी तरह से अविश्वसनीय था। जाहिरा तौर पर, सेप्टुआजेंट के अनुवादकों ने इनमें से कुछ समस्याओं को खत्म करने के प्रयास में इस दृष्टिकोण को साझा किया और पाठ में बार-बार संख्याएँ बदलीं। *द मिस्टीरियस नंबर ऑफ द हिब्रू किंग्स* में एडविन थिएल ने प्रदर्शित किया है कि मैसोरेटिक पाठ, सही ढंग से समझे जाने पर, कालानुक्रमिक डेटा को सटीक रूप से संरक्षित करता है, जो समझ में नहीं आने के बावजूद, सदियों से सही ढंग से प्रसारित किया गया था।

उत्तर और दक्षिण के राजाओं के कालक्रम का समन्वय

मैंने अभी उल्लेख किया है कि मुझे

लगता है कि पिछली कक्षा में हमें उत्तर और दक्षिण के राजाओं के शासनकाल का समन्वय मिला था। जब आप केवल संख्याओं को जोड़कर इसे हल करने का प्रयास करते हैं, तो वे लंबे समय तक, सैकड़ों वर्षों के लिए सिंक्रनाइज़ेशन से बाहर हो जाते हैं। यह कुछ ऐसा है जिसका तब तक कोई समाधान नहीं था जब तक कि एडविन आर. थिएले ने यह पुस्तक, *द मिस्टीरियस नंबरर्स ऑफ द हिब्रू किंग्स नहीं लिखी*, और उन मतभेदों को हल करने का कोई तरीका नहीं निकाला। लेकिन आप देख रहे हैं कि मुद्दा स्पष्ट हो रहा है: इस तथ्य के बावजूद कि शासनकाल स्पष्ट रूप से सिंक्रनाइज़ नहीं हुए थे, उन्हें पाठ में बरकरार रखा गया था, जो वास्तव में पाठ के कम से कम उस हिस्से के प्रसारण की सटीकता का प्रमाण है। आप कुछ घटित होने की उम्मीद करेंगे, सेप्टुआजेंट जैसा कुछ, यदि यह सिंक्रनाइज़ेशन की एक स्पष्ट समस्या थी तो कुछ संशोधन। तो ऐसा लगता है कि कम से कम उस क्षेत्र में मैसोरेटिक पाठ ने पसंदीदा पाठ को संरक्षित रखा है। जैसा कि ग्रे 1 और 2 किंग्स, पृष्ठ 45, कहता है, "सेप्टुआजेंट की संख्या कुख्यात जटिलता के कालक्रम के सामंजस्य के प्रयासों का प्रतिनिधित्व करती है। आमतौर पर वे समस्या को जटिल बनाते हैं और इज़राइल और यहूदा में डेटिंग की प्रणालियों की अज्ञानता को प्रकट करते हैं। एक बार जब आप समझ जाते हैं डेटिंग की प्रणालियों से, समन्वयन की इनमें से कई कठिनाइयाँ गायब हो जाती हैं।" लेकिन जब तक थिएले ने इस पर चर्चा नहीं की, तब तक समस्या की बहुत कम समझ थी।

राजाओं के पाठ का आकलन करने पर बहुत काम किया जाना बाकी है। *द बाइबिलिकल क्रिटिसिज़्म: हिस्टोरिक, लिटरेरी एंड टेक्स्टुअल, ज़ॉंडरवन, 1978* में ब्रूस वाल्टके द्वारा लिखित लेख, "द टेक्स्टुअल क्रिटिसिज़्म ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट" देखें। इसलिए मैंने सिर्फ टेक्स्ट के बारे में इसका उल्लेख किया है ताकि आपको कम से कम कुछ जानकारी मिल सके। है कि प्रश्न।

आइए उस नए हैंडआउट पर चलते हैं। थिएले अब नए संस्करण में प्रिंट में है, जो शुरूआती संस्करण की तुलना में अधिक हालिया संस्करण है। उन्होंने अपने बड़े काम का एक प्रकार का संक्षिप्त, लोकप्रिय सारांश भी लिखा। इसे प्रकाशित किया गया था, और मुझे लगता है कि इसे *हिब्रू राजाओं का कालक्रम कहा गया था*, और यह एक छोटा पेपरबैक है जो वास्तव में बड़े काम का एक अच्छा सारांश था; लेकिन वह छोटा पेपरबैक, दुर्भाग्य से, अभी भी प्रिंट में नहीं है, लेकिन बड़ा काम

है।

पिछले 35 या 40 वर्षों में इतिहास के ड्यूटेरोनोमिस्ट धर्मशास्त्र ने "ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहास" की प्रकृति और उद्देश्य पर एक पूर्ण, जटिल और निरंतर बहस देखी है। इस बहस का अधिकांश हिस्सा इतिहासकार, या इतिहासकारों के धार्मिक उद्देश्य, या उद्देश्य से संबंधित है, जिन्होंने इस इतिहास की रचना की है। याद रखें मैंने पिछले सप्ताह "ड्यूटेरोनोमिस्टिक हिस्ट्री" शब्द का उल्लेख किया था। आप उस शब्द का उपयोग उस तरीके से कर सकते हैं जिसे मैं वैध तरीके से देखता हूँ, और इसका उपयोग उस तरीके से भी किया जा सकता है जो मुझे लगता है कि पवित्रशास्त्र के उच्च दृष्टिकोण का उल्लंघन करता है। यह शब्द स्वयं मार्टिन नोथ द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था, उनका विचार था कि निर्वासन काल में एक लेखक रहता था जो तब ड्यूटेरोनोमी की पुस्तक से प्रभावित था। निःसंदेह, नोथ ने समझा कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक मोज़ेक नहीं बल्कि 621 ईसा पूर्व, जोशिया के समय, निर्वासन से कुछ समय पहले की है। लेकिन निर्वासन में रहने वाला यह लेखक व्यवस्थाविवरण के धर्मशास्त्र से प्रभावित था और फिर उसने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से लेकर 2 राजाओं के अंत तक की संपूर्ण सामग्री की रचना की। लेकिन आप कह सकते हैं कि व्यवस्थाविवरण उनके काम की प्रस्तावना थी। इसमें उनका धर्मशास्त्र शामिल है जिसे वह बाकी कार्यों में प्रतिबिंबित करना चाहते थे, इसलिए कहा जाता है कि यहोशू, न्यायाधीश, सैमुअल और राजा सभी इस व्यवस्थाविवरणवादी इतिहास से प्रभावित थे।

यह कनान में इज़राइल के इतिहास की पूरी अवधि के इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है, जो एक कृषिविज्ञानी धर्मशास्त्री के दृष्टिकोण से लिखा गया है, यही ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहास है। अब, परिणामों पर विचार करें. यह आपको यह समझने के लिए मजबूर करता है कि इतिहास में जो कुछ भी लिखा गया है वह विश्वसनीय ऐतिहासिक लेखन नहीं है क्योंकि उसने इतिहास को ऐसे रिकॉर्ड किए गए विचारों के साथ विकृत किया है जो इस धार्मिक ढांचे में फिट बैठते हैं। वह देर से लिख रहा है, अपने धर्मशास्त्र को पहले के समय में पेश कर रहा है, और ऐसा करने में वह चीजों को उस पैटर्न के अनुरूप होने के लिए मजबूर कर रहा है जो वास्तव में कभी नहीं हुआ था। मुझे ऐसा लगता है कि

यह दृष्टिकोण कुछ ऐसा है जो धर्मग्रंथ के रूप में बाइबल के साथ असंगत है।

हालाँकि, आप इस शब्द का उपयोग उस चीज़ को प्रतिबिंबित करने के लिए कर सकते हैं जो मुझे लगता है कि सच है, और वह यह है कि जोशुआ, न्यायाधीशों, सैमुअल और किंग्स की किताबें व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के धार्मिक विचारों को प्रतिबिंबित करती हैं। मुझे नहीं लगता कि इस बारे में कोई सवाल है। मुद्दा यह है कि, व्यवस्थाविवरण को वहीं रखा जाना चाहिए जहां बाइबिल इसे रखती है, मूसा के समय में, सिनाई वाचा में अपने लोगों के साथ प्रभु के संबंध को समझाते हुए। वह रिश्ता ही सदियों से घटनाओं के क्रम को नियंत्रित करता रहा है। तो लेखक, जिन्हें मैं निर्वासन में रहने वाले एक लेखक के रूप में नहीं देखूंगा, लेकिन यहोशू की पुस्तक के लेखक, न्यायाधीशों की पुस्तक के लेखक, सैमुअल के लेखक, राजाओं के लेखक, वे सभी लोग थे जो आए थे विचार की वह धारा।

इसलिए जब उन्होंने उन विभिन्न अवधियों का अपना इतिहास बनाया, तो उन्होंने यह कहानी बताई, जैसे चीजें घटित हुईं, और चीजें वैसे ही हुईं जैसे उन्हें प्रोग्राम किया गया था, आप व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से कह सकते हैं। प्रभु ने कहा, यदि तुम आज्ञाकारी हो, तो आशीष होगी; यदि तुम मुँह मोड़ोगे, तो शाप मिलेगा। इजराइल का इतिहास सदियों से हो रहे इस बात को प्रतिबिंबित करता है। तो इस अर्थ में आप कह सकते हैं कि एक वैध तरीका है जिसमें आप इतिहास के ड्यूटोनॉमिस्टिक धर्मशास्त्र के बारे में बात कर सकते हैं, लेकिन आइए इसके साथ थोड़ा आगे बढ़ें।

राजाओं का चरित्र, उद्देश्य और महत्व ए। लेखक एक वाचा के परिप्रेक्ष्य से इजराइल और यहूदा के राजाओं का इतिहास देता है।

एक 1 और 2 राजाओं का चरित्र और उद्देश्य है जैसा कि इसके महत्व और संरचना से पता चलता है। सामान्य तौर पर, मुझे लगता है कि 1 और 2 राजाओं पर चिंतन से निम्नलिखित टिप्पणियों की पुष्टि की जा सकती है:

उ. लेखक वाचा के दृष्टिकोण से इस्राएल और यहूदा के राजाओं का इतिहास देता है। मार्गदर्शक थीसिस यह है कि राष्ट्र का कल्याण राजा और लोगों की उनके वाचा संबंधी दायित्वों के प्रति आज्ञाकारिता पर निर्भर करता है जैसा कि मोज़ेक वाचा में परिभाषित किया गया है। मुझे लगता है कि

यह किंग्स की पुस्तक का एक मौलिक सिद्धांत है, मुझे लगता है कि यह जोशुआ, न्यायाधीशों और सैमुअल की सामग्री पर भी समान रूप से लागू होता है। जब आप राजाओं के पास आते हैं, तो आप राज्य काल के बारे में बात कर रहे होते हैं, और आपके पास वाचा के दृष्टिकोण से उस अवधि का इतिहास होता है। मार्गदर्शक थीसिस यह है कि राष्ट्र का कल्याण राजा और लोगों की उनके वाचा संबंधी दायित्वों की आज्ञाकारिता पर निर्भर करता है।

बी. एक अनुबंध सिद्धांत के आधार पर इज़राइल के इतिहास का भविष्यवाणी मूल्यांकन

बी. इस वाचा के परिप्रेक्ष्य से इज़राइल के इतिहास का विश्लेषण यहोशू से लेकर 2 राजाओं तक पाया जा सकता है। यहूदी परंपरा में इन पुस्तकों को सामूहिक रूप से "पूर्व पैगंबर" कहा जाता है। एक बहुत ही वास्तविक अर्थ में यह कहा जा सकता है कि इन पुस्तकों में एक अनुबंध सिद्धांत के आधार पर इज़राइल के इतिहास का भविष्यसूचक मूल्यांकन शामिल है। मेरा मानना है कि "पूर्व पैगंबर" शब्द एक अच्छा पदनाम है, जिसे हम आम तौर पर ऐतिहासिक किताबें कहते हैं।

हम अक्सर इतिहास को घटनाओं के एक अलग, वस्तुनिष्ठ प्रकार के रूप में सोचते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि वास्तविक इतिहास लेखन में हमेशा परिप्रेक्ष्य शामिल होते हैं। एक इतिहासकार कुछ मानदंडों के अनुसार जो कुछ हुआ उसका आकलन कर रहा है, चीजों का आकलन कर रहा है, और जो भी शुरुआती बिंदु है उसे लिख रहा है। यहोशू से 1 और 2 राजाओं की इन पुस्तकों के लेखक इज़राइल में जो कुछ चल रहा था उसके मूल्यांकन में इस वाचा संबंधी परिप्रेक्ष्य को ला रहे हैं। मुझे लगता है, यह परिलक्षित होता है

एक भविष्यवाणी व्याख्या, आप कह सकते हैं। यह जो चल रहा था उसके महत्व का वर्णन है। यह एक भविष्यसूचक व्याख्या है, जिसे मैं कहूंगा, एक प्रेरित व्याख्या है। इस अर्थ में, इन घटनाओं के महत्व के बारे में भगवान का अपना दृष्टिकोण है जो हमारे सामने है।

इतिहास बहुत रहस्यमयी चीज़ है। यदि आप घटनाओं के महत्व या अर्थ का आकलन करने का प्रयास करते हैं, और भगवान कैसे काम कर रहे हैं और भगवान इतिहास में क्या कर रहे हैं, तो आपके पास कई अलग-अलग राय हैं। आप एक व्यक्ति से पूछें, यह एक बात होगी, और बाकी सभी

से यह कुछ और होगी। यह बहुत ही मायावी चीज़ हो सकती है। जब तक आपके पास व्याख्या करने वाला दिव्य शब्द न हो, मुझे लगता है कि यह समझना बहुत कठिन है कि क्या हो रहा है इसका सही-सही आकलन कैसे किया जाए। यहोशू, न्यायाधीशों, शमूएल और राजाओं में हमारे पास यही है; यह इतिहास की एक प्रेरित व्याख्या है।

सी. किंग्स के लेखक/संकलक का वाचा संबंधी दृष्टिकोण

सी. 1 और 2 राजाओं में शामिल सामग्री के चयन और चरित्र को उसके लेखक/संकलक के अनुबंध संबंधी दृष्टिकोण के संबंध में समझा और मूल्यांकन किया जाना चाहिए। अब, मैं केवल लेखक/संकलक कहता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि 1 और 2 किंग्स का लेखक वह व्यक्ति था जिसने स्रोतों का उपयोग किया था। हमने पिछले सप्ताह इस बारे में बात की थी। उनके पास विभिन्न प्रकार के स्रोत थे; उन्होंने उनका उपयोग किया, उन्हें एक साथ रखा, और इस पुस्तक की रचना की, लेकिन उन्होंने यह सब एकीकृत तरीके से किया; इसलिए आप उसे लेखक/संकलक कह सकते हैं। लेखक का उद्देश्य आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष इतिहासलेखन के सिद्धांतों के अनुसार इज़राइल के साम्राज्य काल का राजनीतिक, आर्थिक इतिहास प्रस्तुत करना नहीं था। यह उसका उद्देश्य नहीं था। लेखक विभिन्न राजाओं के महत्व और उनके कार्यों पर राजनीतिक-आर्थिक के बजाय एक संविदात्मक निर्णय देता है।

उदाहरण के लिए, धर्मनिरपेक्ष इतिहासकार के दृष्टिकोण से, ओम्री उत्तरी साम्राज्य के सबसे महत्वपूर्ण राजाओं में से एक था। लेकिन उसके शासनकाल को छह छंदों, 1 राजा 16:23-28 में खारिज कर दिया गया है। उत्तरी साम्राज्य में एक महत्वपूर्ण राजा के रूप में अपने कार्यकाल के सौ साल बाद सीरियाई अभिलेखों में ओम्री का उल्लेख किया गया है। आप उम्मीद कर सकते हैं कि एक इस्राएली ओमरी को बहुत अधिक प्रशंसा देगा। उन्होंने सामरिया को उत्तरी साम्राज्य की राजधानी के रूप में स्थापित किया और एक राजवंश की स्थापना की जो काफी लंबे समय तक चला। वह एक महत्वपूर्ण राजा था। किंग्स: छह छंदों के लेखक ने इसमें बहुत अधिक रुचि नहीं दी है।

इसी तरह, उत्तर के यारोबाम द्वितीय की महत्वपूर्ण भूमिका को 2 राजा 14:23-29 में संक्षेप में

बताया गया है। यारोबाम द्वितीय ने उत्तरी साम्राज्य को राजनीतिक, आर्थिक दृष्टि से अपनी ऊंचाई पर पहुंचाया, यहां तक कि इसकी सीमाओं को उत्तर की ओर बढ़ाया। लेकिन जहाँ तक राजाओं के लेखक का सवाल है, यारोबाम का बहुत अधिक महत्व नहीं है।

एक उदाहरण के रूप में योशियाह एक अन्य उदाहरण के रूप में, वह लेखक हमें योशियाह के शासनकाल के पहले 18 वर्षों के बारे में कुछ नहीं बताता है, लेकिन उसके शासनकाल के 18वें वर्ष में शुरू हुए सुधार के साथ उसके शासन का विवरण शुरू करता है। 2 राजा 22:3 इस प्रकार है। योशियाह के सुधार पर कुछ अध्याय हैं, जब उसने इस्राएल को प्रभु के पास वापस बुलाया और फसह मनाया। प्राचीन निकट पूर्व में मिस्र, बेबीलोन, असीरिया से संबंधित महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओं और सीरिया की भू-राजनीतिक शक्ति में बेबीलोन में एक बड़े बदलाव को नजरअंदाज कर दिया गया है, सिवाय इसके कि यह योशियाह की मृत्यु से संबंधित है। योशियाह के समय में, प्राचीन विश्व में सत्ता का एक बड़ा परिवर्तन चल रहा था। सत्ता का वह परिवर्तन असीरियन प्रभुत्व से बेबीलोनियन प्रभुत्व में बदलाव था। मिस्र सत्ता परिवर्तन में शामिल हो गया। लेकिन आप देखिए, जहां तक राजनीतिक इतिहास का सवाल है, यह उन महत्वपूर्ण मोड़ों में से एक है। किंग्स इसका जिक्र तक नहीं करते। किंग्स इसके बारे में कुछ भी कहते हैं। आपको ऐसा कुछ भी संकेत मिलने का एकमात्र कारण यह है कि मिस्र का फिरौन नेको अशशूरियों की सहायता के लिए गया था।

योशियाह, किसी भी कारण से, किंग्स ने हमें यह नहीं बताया, लेकिन वह नेको को रोकने की कोशिश करने के लिए बाहर गया और वह मारा गया, और हमें बताया गया है कि फिरौन नेको के साथ इस लड़ाई में वह कैसे मारा गया, लेकिन यह एकमात्र बात है कारण यह लाया गया है। अंतरराष्ट्रीय, राजनीतिक परिदृश्य में क्या चल रहा था, इसका आकलन करने का कोई प्रयास नहीं किया गया। उन उद्देश्यों के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है जिनके कारण योशियाह ने फिरौन नेको का विरोध किया। बल्कि, चिंता यह है कि क्या राजाओं के पास वाचा से उल्लेखनीय विचलन थे या वाचा के उल्लेखनीय नवीनीकरण थे। इन पर सबसे ज्यादा ध्यान जाता है। योशियाह जैसा कोई, हिजकियाह जैसा कोई, जिसने सुधार किया, वाचा का नवीनीकरण किया, उन पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता

है। तब तुम्हें मनश्शे या अहाब जैसा कोई व्यक्ति मिलेगा जो वाचा से विमुख हो गया और लोगों को मूर्तिपूजा की ओर ले गया। उन्हें भी काफ़ी ध्यान मिल सकता है। लेकिन जिन राजाओं पर सबसे अधिक ध्यान जाता है, आप देखते हैं, वे राजा हैं जो वाचा की जिम्मेदारियों के प्रति उल्लेखनीय अनुकूल या प्रतिकूल दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हैं; वे ही हैं जिन पर सबसे अधिक ध्यान जाता है।

एक उदाहरण के रूप में मनश्शे मनश्शे, 2 राजा 21:1-19, वाचा से विचलन का एक उदाहरण है। यहां फिर से, यह उसकी वाचा की अवज्ञा है जिस पर उसके शासनकाल की राजनीतिक विशेषताओं के बजाय जोर दिया गया है, उदाहरण के लिए, मिस्र में असीरियन राजनीति में उसकी भागीदारी, जो 2 राजाओं में एक साथ पारित हुई थी। यह हमें केवल असीरियन अभिलेखों से ज्ञात होता है जहां मनश्शे का उल्लेख एसरहद्दोन और अशर्बनिपाल के एक पाठ में किया गया है। आप देखिए, जब किंग्स मनश्शे के शासनकाल का वर्णन करते हैं, तो यह इस बात पर ध्यान नहीं देता है कि अंतरराष्ट्रीय और राजनीतिक परिदृश्य में उनकी भागीदारी क्या थी। वह इसमें शामिल था क्योंकि ये असीरियन रिकॉर्ड इसका संदर्भ देते हैं। किंग्स हमें इसके बारे में कुछ नहीं बताते। किंग्स हमें उस तरीके के बारे में बताते हैं जिसमें वह प्रभु से दूर हो गया और मनश्शे को बेबीलोन में निर्वासित कर दिया गया। उसे अश्शूरियों द्वारा बेबीलोन में निर्वासित कर दिया गया था; उस समय बेबीलोनियों और अश्शूरियों के बीच बेबीलोन पर नियंत्रण के लिए संघर्ष चल रहा था और यही बेबीलोन के उत्थान की शुरुआत थी। लेकिन मनश्शे का बाबुल निर्वासन और उसके बाद के पश्चाताप का संबंध केवल 2 इतिहास 33:10 -13 में है। हमें किंग्स में भी इसके बारे में नहीं बताया गया है।

अहाब एक और शासक है जिसके साथ व्यापक व्यवहार किया गया, असाधारण राजनीतिक महत्व के कारण नहीं, बल्कि उसके शासन के दौरान इज़राइल में पैदा हुई वाचा की निष्ठा के लिए गंभीर खतरों के कारण।

सकारात्मक पक्ष पर, हिजकिय्याह और योशिय्याह को अनुबंध नवीनीकरण में शामिल होने के कारण व्यापक उपचार दिया गया है। इसी परिप्रेक्ष्य में कहा जाता है कि उत्तर के सभी राजाओं ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया और नबात के पुत्र यारोबाम के मार्ग पर चले, जिसने इस्राएल से पाप

करवाया था। नबात का पुत्र यारोबाम उत्तरी विभाजित साम्राज्य काल का पहला राजा है, और उसने उन सुनहरे बछड़ों को दान और बेतेल में स्थापित किया। उसके बाद उत्तर के सभी राजाओं ने उस प्रथा का पालन किया, और इसलिए कहा जाता है कि उन्होंने प्रभु की दृष्टि में बुरा किया है।

ठीक है, वह "सी" था, जिसका मूल विचार यह है कि राजाओं में शामिल सामग्री के चयन और चरित्र को इस संविदात्मक परिप्रेक्ष्य से समझा जाना चाहिए। यह इज़राइल में राज्य काल का राजनीतिक-आर्थिक प्रकार का मूल्यांकन नहीं है - यह एक संविदात्मक मूल्यांकन है।

डी. लेखक भविष्यवाणी और पूर्ति के बीच अंतर्संबंध पर जोर देता है

डी. लेखक इज़राइल राष्ट्र के अनुभव में ऐतिहासिक विकास में भविष्यवाणी और पूर्ति के बीच अंतर्संबंध पर जोर देता है। भविष्यवाणी और पूर्ति पर बहुत जोर दिया गया है। दूसरे शब्दों में, इज़राइल के ऐतिहासिक अनुभव में चीज़ें घटित हुई हैं। हमें पहले ही बता दिया गया और फिर वे सच हो गए। जैसा कि गेरहार्ड वॉन रेड, *द ड्यूटेरोनोमिक थियोलॉजी ऑफ हिस्ट्री एंड 1 एंड 2 किंग्स*, ने "द प्रॉब्लम ऑफ द हेक्साटेच एंड अदर एसेज" में बताया है, भविष्यवाणी और पूर्ति किंग्स की पूरी किताब में व्याप्त है। वह इसके ग्यारह उदाहरणों को सूचीबद्ध करता है जिसमें आम तौर पर पूर्ति को कुछ अभिव्यक्ति के साथ पेश किया जाता है जैसे, "प्रभु के वचन के अनुसार जो उसने [किसी दिए गए भविष्यवक्ता] के मुंह से कहा," या कुछ इसी तरह की पूर्ति उद्धरण। ग्यारह बार तुम्हारा उस से सामना होता है। किंग्स की पुस्तक में इस जोर का नतीजा यह है कि इस अवधि का इतिहास कुछ घटनाओं के आकस्मिक संगम से उत्पन्न कुछ अराजक संयोजन के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है, बल्कि इज़राइल के इतिहास का पाठ्यक्रम एक संप्रभु ईश्वर द्वारा निर्धारित किया गया है जो शासन करता है संपूर्ण इतिहास और अपने उद्देश्यों के अनुसार इज़राइल की अपनी ऐतिहासिक नियति का मार्गदर्शन कर रहा है।

अब यह इतिहास पर एक परिप्रेक्ष्य है, कि एक ईश्वर है जो इतिहास को नियंत्रित करता है और जो पहले से कह सकता है कि यह या वह होने वाला है, और ऐसा होता है। आप किंग्स में उस तरह का क्रम पाते हैं: जैसे-जैसे आप इतिहास के इस दौर से गुजरते हैं, भविष्यवाणी और पूर्ति होती है।

ई. पैगम्बरों ने स्वयं को वाचा के दूत के रूप में प्रमुखता दी है

ई. न केवल भविष्यवाणी और पूर्ति राजाओं की पुस्तक की संरचना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, बल्कि वाचा के दूत के रूप में उनकी भूमिका में भविष्यवक्ताओं को भी प्रमुखता दी जाती है। लोगों को मूर्तिपूजा से दूर करने और उन्हें वाचा की आज्ञाकारिता में वापस लाने के उनके प्रयासों में एलियाह और एलीशा को व्यापक कवरेज दिया गया है। एलीजा और एलीशा को संभवतः राजाओं की पुस्तकों में अन्य दो एकल व्यक्तियों की तुलना में अधिक ध्यान दिया जाता है। वे बहुत प्रमुख हैं; एलियाह और उसके उत्तराधिकारी एलीशा दोनों के मंत्रालय के लिए समर्पित बहुत सारी सामग्री है। अन्य भविष्यवक्ता जिनके मंत्रालयों का उल्लेख किया गया है उनमें शामिल हैं: अहियाह, 1 राजा 11:29; शमियाह, 1 राजा 12:22; येहू, 1 राजा 16:1; मीकायाह, 1 राजा 22; हुल्दा, 2 राजा 22:14; योना, 1 राजा 14:23-27; और यशायाह, 2 राजा 19. आप ध्यान दें, केवल अंतिम दो, योना और यशायाह, जिन्हें विहित, या लेखन, भविष्यवक्ता कहा जाता है, जिन्होंने हमें पवित्रशास्त्र की एक पुस्तक दी है जिस पर उनका नाम है। अन्य भविष्यवक्ताओं ने लिखा होगा, हो सकता है कि उन्होंने न लिखा हो, लेकिन यदि उन्होंने ऐसा किया था तो इसे संरक्षित नहीं किया गया था और पवित्रशास्त्र के सिद्धांत में शामिल नहीं किया गया था। लेकिन राजाओं को वाचा के मार्ग का पालन करने के लिए बुलाने में भविष्यवक्ताओं और भविष्यवक्ताओं की भूमिका पर बहुत जोर दिया गया है।

एफ. लॉर्ड का डेविड से वादा अनुबंध की आज्ञाकारिता/अवज्ञा के साथ मिश्रित

एफ. जबकि लेखक ऐतिहासिक नियति के लिए निर्णायक महत्व के रूप में इज़राइल की आज्ञाकारिता या उसके अनुबंधित दायित्वों की अवज्ञा पर जोर देता है, साथ ही उसने डेविड को प्रभु के वादे के दूरगामी महत्व को पहचाना - कि उसका राजवंश हमेशा के लिए कायम रहेगा। डेविड के घराने और यरूशलेम शहर के प्रति यह दिव्य प्रतिबद्धता, जिसमें उन्होंने अपना नाम बसाया, इज़राइल के ऐतिहासिक अनुभव के निर्धारण में भी एक कारक था। यह "दीपक" के संदर्भ में ध्यान देने योग्य है, जिसका वादा प्रभु ने डेविड से किया था।

आइए उनके कुछ संदर्भों पर नजर डालें ताकि आप देख सकें कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ। 1 राजा 11:36: “यह राज्य के विभाजन का समय है और यहोवा कहता है, “मैं उसके पुत्र को, [अर्थात् सुलैमान के पुत्र] को एक गोत्र दूंगा, कि मेरे दास दाऊद के साम्हने सदा दीपक जलता रहे।” मैं यरूशलेम में हूँ, वही शहर जहां मैंने अपना नाम रखना चुना।” जब सुलैमान यहोवा से विमुख हो गया, और यहूदा के सिंहासन पर रहूबियाम के उत्तराधिकार के समय यारोबाम ने विद्रोह किया, तो यहोवा कहता है कि वह यहूदा के गोत्र को रहूबियाम को देकर दाऊद के वंश को सुरक्षित रखने जा रहा है। इसका कारण यह है, कि यरूशलेम में मेरा दास दाऊद सदैव मेरे साम्हने दीपक जलाए रहे। इसका कारण यह है कि परमेश्वर ने दाऊद से अनन्त राजवंश का वादा किया था, और उस वादे का इतिहास के पाठ्यक्रम पर प्रभाव पड़ता है। यहोवा ने अपने वादे के कारण दाऊद का सिंहासन सुरक्षित रखा।

15:4 को देखें: “तौभी दाऊद के निमित्त उसके परमेश्वर यहोवा ने उसके उत्तराधिकारी के लिये एक पुत्र उत्पन्न करके, और यरूशलेम को दृढ़ करके, उसे यरूशलेम में दीपक दिया। क्योंकि दाऊद ने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, और हिती ऊरिय्याह के मामले को छोड़ कर, अपने जीवन भर यहोवा की किसी भी आज्ञा का पालन करने से नहीं चूका।

आप देखिए, उस श्लोक को पहले आए श्लोक के साथ पढ़ा जाना चाहिए। हम अबिय्याह के बारे में बात कर रहे हैं और आपने पद 3 में पढ़ा, “उसने वे सभी पाप किए जो उसके पिता ने उससे पहले किए थे। उसका हृदय अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति पूरी तरह समर्पित नहीं था जैसा कि उसके पूर्वज दाऊद का था। फिर भी, दाऊद के निमित्त यहोवा ने उसके उत्तराधिकारी के रूप में एक पुत्र उत्पन्न करके उसे यरूशलेम में दीपक दिया।”

आप देखिए, मैं जो कहना चाह रहा हूँ वह यह है कि इज़राइल के इतिहास के विकास में डेविड से किया गया वादा भी एक कारक है। 2 राजा 8:19 के अन्य कई संदर्भ हैं। यह डेविड से किए गए वादे (1 राजा 8:20, 25; 9:5) के अधिक सामान्य संदर्भों में भी दिखाई देता है, और यहूदा के बाद के इतिहास में विशिष्ट ऐतिहासिक विकास पर इसका प्रभाव पड़ता है। 1 राजा 11, 12, और 13:11-32 देखें। किंग्स के लेखक इस बात से अच्छी तरह परिचित हैं कि एक और चीज़ जो इज़राइल के इतिहास

के दौरान एक महत्वपूर्ण कारक थी वह वह वादा था जो प्रभु ने डेविड को दिया था।

जी. डेविड का जीवन और शासन आदर्श मानक है जिसके द्वारा बाद के राजाओं के जीवन को मापा जाता है जी. किंग्स के लेखक ने न केवल डेविड और उसके घराने को दिए गए ईश्वरीय वादे और इज़राइल के ऐतिहासिक अनुभव पर इसके प्रभाव पर जोर दिया है, बल्कि उन्होंने यह भी कहा है डेविड के जीवन और शासनकाल को आदर्श मानक के रूप में उपयोग करता है जिसके द्वारा बाद के राजाओं के जीवन को मापा जाता है। और यहीं पर हम उस वाक्यांश को बार-बार देखते हैं, हम बस उनमें से एक को पढ़ते हैं, लेकिन मुझे यहां मनमाने ढंग से एक को चुनने दें। 15:11 को देखें क्योंकि यह उसी अध्याय में है जिसके लिए हम खुले हैं 15:11 है: "आसा ने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, जैसा उसके पिता दाऊद ने किया था।" देखिए, उस तरह की अभिव्यक्ति जहां कोई कुछ ऐसा करता है जिसके लिए उसकी सराहना की जाती है, और फिर उसकी तुलना डेविड से की जाती है, जिस मानक के आधार पर राजाओं का मूल्यांकन किया जाता है, डेविड आदर्श है - ऐसा अक्सर किया जाता है। इसमें लेखक सामान्य रूप से राजत्व की संस्था और विशेष रूप से डेविड के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण दिखाता है। मुझे नहीं लगता कि आप यह कह सकते हैं कि किंग्स के लेखक का राजत्व के प्रति पूरी तरह से नकारात्मक रवैया है। अब, यह सच है कि राजा लगातार आदर्श से पीछे रह जाते हैं, और इसके लिए उनकी निंदा की जाती है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि लेखक का राजत्व के बारे में पूरी तरह से नकारात्मक दृष्टिकोण है। मुझे लगता है कि यह उस तरीके से प्रतिबिंबित होता है जिस तरह से वह डेविड के बारे में बात करते हैं।

एच . निर्वासन में लोगों को अपमान का कारण समझाने का उद्देश्य क्योंकि उन्होंने वाचा तोड़ दी थी जब इन सभी कारकों में से, मुझे याद नहीं है कि उनमें से कितने थे, लेकिन ए से जी तक को एक साथ लिया जाता है, यह स्पष्ट लगता है कि 1 और 2 राजाओं को निर्वासित लोगों को यह समझाने के लिए लिखा गया है कि उनके अपमान की स्थिति का कारण यह है कि वे वाचा तोड़ने वाले लोग थे। याद रखें कि यह निर्वासन में लिखा गया है। उनका न्याय हो चुका है, और जब वे अपने इतिहास पर नज़र डालते हैं तो इसकी व्याख्या यहां दी गई है। मुझे लगता है कि यह उन्हें बहुत स्पष्ट

रूप से समझा दिया गया है। परमेश्वर उन पर निर्वासन लाने में पवित्र और न्यायकारी है।

हम इसे 2 राजा 17:6-23 में उत्तरी साम्राज्य के संबंध में देखते हैं। आइए उस पर नजर डालें। मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण अध्याय है क्योंकि यह उत्तरी साम्राज्य का पतन है, और जब ऐसा होता है, तो स्पष्टीकरण दिया जाता है कि उत्तरी साम्राज्य निर्वासन में क्यों चला गया। आपने पहले 5 या 6 छंदों में पढ़ा कि कैसे असीरियन आए, सामरिया पर आक्रमण किया, उस पर कब्जा किया, और फिर इस्राएलियों को अशशूर में निर्वासित कर दिया।

श्लोक 7 को देखें: “यह सब इसलिए हुआ क्योंकि इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया था, जो उन्हें मिस्र के राजा फिरौन की अधीनता से मिस्र से निकाल लाया था। वे अन्य देवताओं की पूजा करते थे और उन राष्ट्रों की प्रथाओं का पालन करते थे जिन्हें भगवान ने उनके सामने से निकाल दिया था, और साथ ही उन प्रथाओं का भी पालन किया जो इस्राएल के राजाओं ने शुरू की थीं। इस्राएलियों ने गुप्त रूप से अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध काम किये जो उचित नहीं थे। उन्होंने प्रहरीदुर्ग से लेकर गढ़वाले नगर तक अपने सब नगरों में ऊँचे स्थान बनाए। उन्होंने हर ऊंची पहाड़ी पर और हर फैले हुए पेड़ के नीचे पवित्र पत्थर और अशेरा नाम की लाठें खड़ी कीं। उन्होंने हर एक ऊंचे स्थान पर उन जातियों की नाईं जिन्हें यहोवा ने उनके पहिले से निकाल दिया था, धूप जलाया। उन्होंने दुष्ट कार्य किये जिससे यहोवा क्रोधित हुआ। उन्होंने मूर्तियों की पूजा की, हालाँकि प्रभु ने कहा था 'तुम ऐसा नहीं करोगे।' यहोवा ने अपने सभी भविष्यवक्ताओं और द्रष्टाओं के द्वारा इस्राएल और यहूदा को चेतावनी दी: 'अपनी बुरी चाल से फिरो। मेरी आज्ञाओं और विधियों को उस सम्पूर्ण व्यवस्था के अनुसार मानना, जिसका पालन करने की आज्ञा मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दी थी, और जो मैं ने अपने दास भविष्यवक्ताओं के द्वारा तुम तक पहुंचाई थी।”

1 . भविष्यवक्ता उन्हें वाचा की ओर वापस बुला रहे हैं

देखिए, यह भविष्यवक्ताओं का कार्य था, उन्हें वापस वाचा की ओर ले जाना, उन्हें कानून का पालन करने के लिए वापस ले जाना। “परन्तु उन्होंने न सुना, और अपने पुरखाओं के समान हठीले हो गए, जिन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा नहीं रखा।” और पद 15 है, “उन्होंने उसके नियमों और

उस वाचा को अस्वीकार किया जो उस ने उनके पुरखाओं से बान्धी थी, और जो चेतावनियां उस ने उन्हें दी थीं।" यही इसका हृदय है। "उन्होंने उसके आदेशों और वाचा को अस्वीकार कर दिया।" उन्होंने मूर्तियों का अनुसरण किया; उन्होंने राष्ट्रों का अनुकरण किया। श्लोक 16: "उन्होंने प्रभु की आज्ञाओं को त्याग दिया।" पद 18: "तब यहोवा इस्राएल पर क्रोधित हुआ, और उन्हें अपने साम्हने से दूर कर दिया।" यही मुद्दा है, और किंग्स की किताब निर्वासित लोगों को समझाती है कि वे इस स्थिति में क्यों हैं जिसमें वे खुद को पाते हैं।

ध्यान दें कि पद 18 किस प्रकार आगे बढ़ता है; क्योंकि यह अध्याय उत्तरी साम्राज्य के पतन के संदर्भ में है। बेशक, लेखक निर्वासन में रह रहा है, वह उस समय रह रहा है जब दक्षिणी साम्राज्य ने भी यही काम किया था। और इसलिए, देखो वह क्या कहता है, "यहूदा का गोत्र ही रह गया, और यहां तक कि यहूदा ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन न किया।" आप देखिए, यह वही न्याय है जो यहूदा पर आता है। यहां तक कि यहूदा ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन नहीं किया, उन्होंने उन रीतियों का पालन किया जिन्हें इस्राएल ने आरम्भ किया था। इसलिए, यहोवा ने इस्राएल के सभी लोगों को अस्वीकार कर दिया। अध्याय 17 की व्याख्या वास्तव में इस बात की व्याख्या है कि इसे केवल उत्तर में ही क्यों नहीं, बल्कि दक्षिण में भी समान रूप से लागू किया जाता है। और यही मुद्दा है. उन्होंने वाचा को अस्वीकार कर दिया। इसलिये उस ने उनको दुःख दिया, और लुटेरोंके हाथ में कर दिया, यहां तक कि उस ने उनको अपने साम्हने से निकाल दिया; वह यहूदा, दक्षिणी साम्राज्य की बात कर रहा है। ठीक है, तो हम इसे 2 राजा 17:6-23 में उत्तरी साम्राज्य के संबंध में देखते हैं। हम इसे 2 राजा 17:18-20 में दक्षिणी साम्राज्य के संबंध में उन दो छंदों में देखते हैं जिन्हें हमने अभी देखा।

2 राजा 21 हमें मनश्शे के शासनकाल के बारे में बताता है। और जब तुम दक्षिण के राजाओं में सबसे दुष्ट मनश्शे के शासन के विषय में पढ़ते हो, तो यहोवा कहता है, मनश्शे के कारण यहूदा का निर्वासन अपरिहार्य है। यह आने वाला है, यह तय है, यह तय है। मनश्शे के बाद, आप योशियाह के साथ एक सुधार पाते हैं, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। उस समय बहुत देर हो चुकी है क्योंकि निर्णय निर्धारित हो चुका है। 2 राजा 22 और 23 में योशियाह के अधीन सुधार को बहुत कम और बहुत देर से देखा गया है (2 राजा 23: 26 और 27 देखें)। छंद 26 और 27 कहते हैं, "तौभी, यहोवा अपने भड़के

हुए क्रोध की आग से दूर न हुआ, जो मनश्शे ने उसे क्रोध दिलाने के लिये जो कुछ किया था उसके कारण यहूदा पर भड़का था। इसलिए यहोवा ने कहा, 'जैसे मैंने इस्राएल को अपने सामने से हटा दिया, वैसे ही मैं यहूदा को भी अपने सामने से हटा दूंगा, और मैं यरूशलेम को, उस शहर को, जिसे मैंने चुना है, और इस मंदिर को, जिसके विषय में मैंने कहा था, 'वहां मेरा नाम होगा, अस्वीकार कर दूंगा।' तथ्य यह है कि उसने अपने नाम को यरूशलेम के मंदिर में स्थापित किया था, यह कोई स्वचालित तरीके से यहूदा के निरंतर अस्तित्व की गारंटी देने वाला नहीं था क्योंकि वे लगातार उससे दूर हो गए थे। तो यह पुस्तक मूल रूप से इज़राइल के इतिहास का पूर्वव्यापी विश्लेषण है, जो यरूशलेम के विनाश के कारणों और निर्वासन के अनुभव को समझाने के लिए दी गई है।

हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि सब कुछ खो गया है और भविष्य के लिए कोई उम्मीद नहीं है। लेखक पूरे इतिहास में डेविड से किये गये वादे को ध्यान में रखता है। इज़राइल की अवज्ञा और इसके परिणामस्वरूप सिनाई वाचा के शापों के एहसास के बावजूद, इज़राइल के भविष्य के लिए डेविड से किए गए उसके वादे के निहितार्थों पर काम नहीं किया गया है या उन पर टिप्पणी नहीं की गई है। लेकिन यह वादा राजाओं की पुस्तक में एक ऐसे आधार के रूप में प्रमुख है जिसके आधार पर इज़राइल निराशा के बजाय आशा के अच्छे कारण के साथ भविष्य की ओर देख सकता है। इसी संबंध में वॉन रैड ने अपने लेख "द प्रॉब्लम ऑफ द हेक्साटेच" में 2 किंग्स 25:27-30 के बारे में कहा है - यह किताब का आखिरी खंड है जहां यहोयाचिन, जिसे बेबीलोन ले जाया गया था और जेल में डाल दिया गया था बेबीलोन की जेल से रिहा कर दिया गया है। वॉन रैड कहते हैं - "स्पष्ट रूप से, यहाँ कुछ भी पूरी तरह से धार्मिक शब्दों में नहीं कहा गया है। लेकिन एक सावधानीपूर्वक मापा गया संकेत एक ऐसी घटना का उल्लेख करता है जिसका ऊ्यूटेरोनोमिस्ट के लिए अत्यधिक महत्व है क्योंकि यह एक आधार प्रदान करता है जिस पर यहोवा चाहे तो आगे निर्माण कर सकता है। . सभी घटनाओं में पाठक को इस अनुच्छेद को इस तथ्य का संकेत समझना चाहिए कि डेविड की वंशावली का अपरिवर्तनीय अंत नहीं हुआ है।" पुस्तक के अंत में डेविड की पंक्ति अभी भी बरकरार है। यहोयाकीन अब भी जीवित है; वह जेल से रिहा हो गया है। आप नहीं जानते कि उससे आगे क्या होने वाला है। लेखक अटकलें नहीं लगाता. ठीक है, यह सब इस शीर्षक के अंतर्गत था, "इन महत्वों और संरचना में देखा

गया 1 और 2 राजाओं का चरित्र और उद्देश्य।"

2. मार्टिन नोथ और गेरहार्ड वॉन रेड का ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहास

आइए मैं आपको कुछ अंदाज़ा दूं कि आप किस प्रकार के ज़ोर देखते हैं और यह पुस्तक के उद्देश्य को कैसे दर्शाता है। ठीक है, "2" "मार्टिन नोथ और गेरहार्ड वॉन रेड द्वारा समर्थित ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहास के दृष्टिकोण पर कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ।" प्रथम मार्टिन नोथ, वह शब्द के तकनीकी अर्थ में इस संपूर्ण "ड्यूटेरोनोमिस्टिक हिस्ट्री" के प्रवर्तक थे। मार्टिन नोथ ने यह विचार प्रस्तावित किया कि 2 राजाओं के लिए संपूर्ण व्यवस्थाविवरण निर्वासित युग के एक व्यवस्थाविवरणवादी इतिहासकार का काम था। हालाँकि, अधिकांश लोगों का मानना है कि इस व्यवस्थाविवरणवादी इतिहास में भविष्य के लिए कोई दृष्टिकोण नहीं है। एकमात्र रुचि अतीत में है. वह कार्य में कोई युगांतशास्त्रीय आयाम नहीं देखता है, और कहता है कि ड्यूटेरोनोमिक इतिहासकार कहीं भी इस बात की पुष्टि या संकेत नहीं देता है कि इज़राइल का इतिहास उनके पाप के कारण ईश्वर द्वारा उन पर लाई गई आपदा से परे जारी रह सकता है। यह एक समाप्त इतिहास है. उन्होंने नोट किया कि 2 राजा 25:27-30 में भविष्य की बहाली का कोई संदर्भ नहीं है, न ही यह किसी भी दृष्टि से ऐसी व्याख्या के लिए उपयुक्त है। नोथ इस नकारात्मक दृष्टिकोण को व्यवस्थाविवरण के अनुरूप मानता है, जिसमें अवज्ञा के लिए शाप का उच्चारण किया गया था।

अब, यदि आप व्यवस्थाविवरण जानते हैं, तो आप कह सकते हैं: "व्यवस्थाविवरण 30 के बारे में क्या?" यह कहता है कि प्रभु पश्चाताप करने जा रहे हैं, और जब वे ऐसा करते हैं, तो प्रवासी वापस लौट आते हैं। नॉथ व्यवस्थाविवरण 30:1-4 को बाद में जोड़े गए रूप में देखता है। यह सब आलोचनात्मक श्रृंखला से है। जब इस तरह का कोई अंश सिद्धांत के साथ फिट नहीं बैठता है तो हमेशा कहा जाता है कि यह मूल रूप से वहां नहीं था। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि इस दृष्टिकोण में डेविडिक वादे और राजाओं के आख्यानों में इसके कार्य पर पर्याप्त ध्यान देने में विफलता है। मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जिसे नजरअंदाज कर दिया गया है। इसका मूल्यांकन बहुत नकारात्मक है, और फिर भी पुस्तक में चलने वाला डेविडिक विषय कुछ सकारात्मक है। अब माना

कि जो राजा दाऊद के वंश में आये वे आदर्श पर खरे नहीं उतरे, लेकिन फिर भी वह वादा बरकरार है। "मैं तुम्हें एक ऐसा वंश दूँगा जो कायम रहेगा" 2 शमूएल 14:7 में मिलता है।

वॉन रैड और हेल्सगेस्चिचटे [मुक्ति इतिहास]

चलिए वॉन राड की ओर चलते हैं। नोथ और वॉन रेड दोनों आधुनिक, तर्कवादी, आलोचनात्मक विद्वान हैं, न कि इंजीलवादी विद्वान। नोथ की ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहासकार की साहित्यिक थीसिस की अपेक्षा करते हुए, वॉन रैड दुनिया के उद्देश्य या उद्देश्य के बारे में नोथ के दृष्टिकोण से असहमत हैं। ड्यूटेरोनोमिक इतिहास के बारे में वॉन रैड के दृष्टिकोण के केंद्र में "भगवान के शब्द" का धर्मशास्त्र है - उनकी शब्दावली - जो वह इसमें पाते हैं। यह शब्द सबसे पहले व्यवस्थाविवरण में घोषित किया गया है और फिर शेष सामग्री में दोहराया गया है। जो घटित होता है वह इस पर्याप्त शब्द का प्रभाव है। यह इस शब्द की कार्यप्रणाली है, जो इतिहास को *हेल्सगेस्चिचटे*, "मुक्ति का इतिहास" बनाती है। *हील्स गोस्चिच्चे* "मुक्ति के इतिहास" के लिए एक जर्मन शब्द है। हालाँकि, यह शब्द निंदा करने वाला है (जैसा कि व्यवस्थाविवरण 28:15 और उसके बाद के श्रापों में देखा गया है) और मुक्ति देने वाला है (जैसा कि 2 शमूएल 7 के मसीहाई वादे में देखा गया है)। इतिहास में दोनों समान रूप से कुशल हैं। इज़राइल के इतिहास में क्या हुआ है और क्या होगा यह इस दोहरे शब्द पर निर्भर करता है, जिसे वह मूल रूप से कानून और सुसमाचार के रूप में देखता है, न कि घटनाओं पर। इस कारण से, इज़राइल का इतिहास भविष्य की ओर खुला है। 2 किंग्स का अंत मसीहाई वादे की संभावित भविष्य की पूर्ति के लिए जगह छोड़ता है।

फिर, ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहास का नथ की तरह ही कोई नकारात्मक उद्देश्य नहीं है, बल्कि डेविडिक घर की बहाली की संभावना के लिए खुला है। ऐसा प्रतीत होता है कि वॉन रैड का दृष्टिकोण किंग्स के माध्यम से जोशुआ की सामग्री के साथ नोथ की तुलना में बेहतर न्याय करता है; हालाँकि, उनके दृष्टिकोण में कई धारणाएँ शामिल हैं जो हमारे लिए सच्चे और स्थायी मूल्य की सामग्री को छीन लेती हैं, जिस पर हम अपने विश्वास को स्थापित और मजबूत कर सकते हैं। मुझे लगता है ये महत्वपूर्ण है। वॉन रेड *हिस्ट्री* और *हेल्सगेस्चिच्चे* के लिए, दो जर्मन शब्द दो अलग-अलग प्रकार के इतिहास को

संदर्भित करते हैं। *हेल्सगोस्चिचटे* "मुक्ति का इतिहास है, और *इतिहास*" जो हुआ उसके अर्थ में "इतिहास" है। जो कुछ घटित हुआ उसके अर्थ में *हेल्सगोस्चिचटे* इतिहास नहीं है: यह एक माना हुआ इतिहास है, एक स्वीकृत इतिहास है। *इतिहास* इस अर्थ में इतिहास है कि क्या हुआ। वॉन रैड *हेल्सगोस्चिचटे* और *इतिहास* के लिए एकदम अलग हो गए हैं। उनकी रुचि *इतिहास* में नहीं है, जो कुछ हुआ उसमें है, बल्कि कन्फेशनल *हेल्सगोस्चिचटे* में है जो उन्हें पुराने नियम के ऐतिहासिक आख्यानो में मिलता है। इसका अंततः मतलब यह है कि यहोशू से लेकर दो राजाओं तक की ऐतिहासिक कथाएँ हमें इस बारे में बहुत कुछ नहीं बताती हैं कि वास्तव में क्या हुआ था। वे हमें बताते हैं कि निर्वासन में रहने वाले एक निश्चित धर्मशास्त्री ने इज़राइल के अतीत के धार्मिक महत्व के बारे में क्या माना और भविष्य के लिए इसका क्या प्रभाव हो सकता है।

उदाहरण के लिए, सांस्कृतिक एकता के कथित अनिवार्य मानक के बारे में बात करते समय, जिसे ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहासकार ने साम्राज्य काल के सभी राजाओं पर लागू किया, वॉन राड जैसे किसी व्यक्ति का विचार, वास्तव में, यह एक व्यापक दृष्टिकोण है, क्या यह लेखक है उनका यह आदर्श है कि व्यवस्थाविवरण को पूजा के केंद्रीकरण की आवश्यकता है। पूजा का केवल एक ही वैध स्थान था और वह यरूशलेम था। पूरे काल के सभी राजाओं का मूल्यांकन इस बात पर किया जाएगा कि वे पूजा के केंद्रीकरण के उस मानक के अनुरूप थे या नहीं।

अब, उनका दृष्टिकोण यह मानता है कि पूजा के केंद्रीकरण का विचार योशियाह के समय और वहां के मंदिर में मिली कानून की किताब तक उत्पन्न नहीं हुआ था। माना जाता है कि इसे योशियाह के समय में संकलित किया गया था और कथित तौर पर यह मोज़ेक था - जबकि यह वास्तव में नहीं था - यरूशलेम में सभी वैध पूजा को सीमित करके यरूशलेम के पैगंबरों और पुजारियों द्वारा यरूशलेम में शक्ति केंद्रित करने के विशिष्ट उद्देश्य के साथ। वॉन रैड की योजना के अनुसार, यह वेलहाउज़ेन तक जाता है: इज़राइल के इतिहास में कई पूजा स्थलों से एक ही पूजा स्थल तक आंदोलन जोशिया के समय में समाप्त हुआ। तो आप देखिए कि यहां क्या हो रहा है: "सांस्कृतिक एकता के कथित अनिवार्य मानक, जिसे ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहासकार द्वारा राज्य काल के सभी राजाओं पर लागू किया गया है" के बारे में बोलते हुए, वॉन रैड कहते हैं, "बेशक यह राजशाही काल में

अज्ञात था।" वह है पूजा के केंद्रीकरण की मांग क्योंकि यह 621 ईसा पूर्व तक नहीं आई थी।

आगे वह कहते हैं, "इतिहास के हर काल में, अतीत को हमेशा, कुछ हद तक, मानकों के व्यक्तिपरक अनुप्रयोग द्वारा गलत आंका जाता है जो बाद के युग के लिए बाध्यकारी हो गए हैं।" वह जो कह रहे हैं वह पूरे इतिहास में घटित हुआ है। यह नवीनतम मानक उन राजाओं पर लागू किया गया है जो उस समय से पहले रहते थे जब यह मानक अस्तित्व में था। उनका मूल्यांकन ऐसे मानक से किया जा रहा है जो उस समय अस्तित्व में ही नहीं था जब वे रहते थे। वह कहते हैं, "हर काल में अतीत को हमेशा, कुछ हद तक, मानकों के व्यक्तिपरक अनुप्रयोग द्वारा गलत आंका जाता है जो बाद के युग के लिए बाध्यकारी हो जाते हैं।" फिर भी वह आगे कहते हैं कि, "इस उद्घरण का मतलब यह नहीं है कि ऐसे निर्णय लेने की वस्तुनिष्ठ शुद्धता और वास्तव में आवश्यकता पर कोई संदेह हो सकता है।"

ध्यान दें कि वस्तुनिष्ठता धर्मशास्त्री के निर्णय को दी गई है, न कि रिपोर्ट की जा रही घटनाओं की तथ्यात्मकता को। मुझे लगता है कि यही उसकी समस्या है। यदि आप किसी सार्थक तरीके से वस्तुनिष्ठता के बारे में बात करने जा रहे हैं, तो मुझे ऐसा लगता है कि आपको तथ्यों की निष्पक्षता के बारे में बात करनी चाहिए। वह इस अर्थ में तथ्यों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं कि क्या हुआ। वह इस फैसले की निष्पक्षता के बारे में बात कर रहे हैं, जो कि कानून के अस्तित्व में आने से पहले उसका व्यक्तिपरक अनुप्रयोग है। वह किसी ऐसी चीज़ में किसी प्रकार की निष्पक्षता लाने की कोशिश कर रहा है जो स्पष्ट रूप से वैसी नहीं है, कम से कम मैं समझता हूँ कि वह क्या कह रहा है।

वह आगे "ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहासकार के ऐतिहासिक लेखन (*ओल्ड टेस्टामेंट थियोलॉजी* , पृष्ठ 336) की स्पष्ट कमियों के बारे में बात करते हैं।" वह कहते हैं, "ड्यूटेरोनोमिस्ट के पास अब अतीत की कई घटनाओं के लिए कोई ठोस मानक नहीं थे, लेकिन उनकी चिंता केवल उन आपदाओं के धार्मिक महत्व को लेकर है जो दोनों राज्यों में आई थीं। इसी चिंता ने इतिहास पर इस दृष्टिकोण को जन्म दिया है।"

अन्यत्र , वॉन रैड विभिन्न प्रकार की पारंपरिक सामग्रियों के साथ काम करने वाले ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहासकार की बात करते हैं। वह कहते हैं, "अक्सर यह सामग्री स्वयं को ड्यूटेरोनोमिस्ट के बुनियादी धार्मिक दृष्टिकोण के अनुरूप आसानी से समायोजित नहीं कर पाती थी।

उदाहरण के लिए, डेविडिक वाचा से संबंधित सामग्री, " वॉन रैड कहते हैं, "पूरी तरह से अनैच्छिक है। लेकिन ड्यूटेरोनोमिक इतिहासकार ने इस आधार पर इसे बाहर नहीं किया।"

ड्यूटेरोनोमिक इतिहास बनाम डेविडिक वाचा इसके अड्यूटेरोनोमिक होने का कारण यह है कि डेविड के बारे में सामग्री सकारात्मक है। विचार यह है कि व्यवस्थाविवरण से प्रभावित लोग राजत्व के विरुद्ध थे क्योंकि राजत्व स्वाभाविक रूप से प्रभु के राजत्व का उल्लंघन करता था। डेविड के बारे में सामग्री सकारात्मक है इसलिए यह व्यवस्थाविवरणवादी धर्मशास्त्र के साथ फिट नहीं बैठती है।

मुझे लगता है कि यह अपने आप में गलत व्याख्या है, लेकिन वह इसे इसी तरह पढ़ रहे हैं। वह क्या कहते हैं, "डेविडिक वाचा की वह सामग्री पूरी तरह से अनड्यूटेरोनोमिक है लेकिन ड्यूटेरोनोमिक इतिहासकार ने इस खाते से इसे बाहर नहीं किया है। यह इस विचार को दर्शाता है कि मोज़ेक और डेविडिक अनुबंधों के बीच एक बुनियादी संघर्ष है, प्रत्येक एक अलग परंपरा और अलग-अलग हितों को दर्शाता है। यह वॉन रैड का दृष्टिकोण है। यहां आपकी दो अलग-अलग परंपराएं हैं जिनमें सामंजस्य नहीं होना चाहिए, इसलिए आप सिनाई वाचा और डेविडिक वाचा के बीच विरोधाभास प्रस्तुत करते हैं।

वह *हेक्साटेच की समस्या* में कहते हैं, "इस दृढ़ता से स्थापित परंपरा को अपनाने में, ड्यूटेरोनोमिस्ट ड्यूटेरोनोमी की पुस्तक के अपने मूल वातावरण से तुरंत दूर चला गया है जहां से उसका धार्मिक दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ था। जिस व्यापक विस्तार तक ड्यूटेरोनोमिस्ट अपनी परंपराओं को नियोजित करते हैं, उससे पता चलता है कि ड्यूटेरोनोमिक परंपराएँ यहाँ अपना आधार नहीं बना सकीं। जाहिर तौर पर बहुत शक्तिशाली मसीहाई अवधारणा इस पर टूट पड़ी थी और सुनवाई की मांग की थी।" तो यह लेखक, इन विभिन्न परंपराओं के साथ काम करते हुए, दोनों इतने मजबूत थे कि वह डेविडिक चीजों को बाहर करने में सक्षम नहीं थे, इसलिए वह इसे शामिल करने की कोशिश करते हैं, लेकिन यह ड्यूटेरोनोमिक धर्मशास्त्र के खिलाफ तनाव में है; कम से कम वॉन रैड का यही विचार है।

जब कोई राजाओं के माध्यम से जोशुआ के ऐतिहासिक आख्यानो की ऐतिहासिकता के प्रति

वॉन रैड के नकारात्मक रवैये को समझता है, तो वह यह निष्कर्ष निकालने के लिए मजबूर हो जाता है कि इज़राइल के इतिहास में ईश्वर के वचन पर कार्य करने पर उसका जोर [और वह अक्सर इसके बारे में बात करता है], कुछ नहीं है जैसा कि बताया गया है, इसमें वास्तविकता है, बल्कि यह ड्यूटेरोनोमिस्टिक धर्मशास्त्री का एक धार्मिक निर्माण है। वॉन रैड के विचार में ईश्वर के शब्द की कार्यप्रणाली वास्तव में ड्यूटेरोनोमिस्टिक धर्मशास्त्री की एक रचना मात्र है।

वेन्नॉय का इतिहास बनाम हेइल्गेस्विचटे का विश्लेषण मुझे लगता है कि आप ईश्वर के शब्द और उसके कार्य के बारे में वैध तरीके से बहुत कुछ ले सकते हैं और वास्तव में इससे कुछ सीख सकते हैं - यदि आप इसे उनके निर्माण से अलग कर सकते हैं जो इसे पूरी तरह से अलग बनाता है महत्व। इतिहास या वास्तव में घटित होने वाली चीज़ों के अर्थ में *हील्गेस्विचटे*, "इकबालिया इतिहास" और *इतिहास* के बीच यह विभाजन, पुराने नियम के साहित्य के प्रति वॉन रैड के दृष्टिकोण की प्रमुख समस्या है। हालाँकि वॉन रैड के पुराने नियम के धार्मिक विश्लेषण से बहुत कुछ सीखा जा सकता है, लेकिन इसे उससे प्राप्त किया जाना चाहिए और एक ऐसे दृष्टिकोण में स्थानांतरित किया जाना चाहिए जो ऐतिहासिक सत्य और धार्मिक सत्य के बीच वॉन रैड की प्रणाली को बढ़ावा देने वाले अंतर्निहित संघर्ष से बचता है। वॉन रैड के लिए, ऐतिहासिक सत्य और धार्मिक सत्य दो अलग-अलग स्तरों पर काम करते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि बाइबिल का मॉडल धार्मिक सत्य ऐतिहासिक सत्य पर आधारित है; दोनों एक साथ काम करते हैं।

लेकिन वी ऑन रैड एक धार्मिक निर्माण दे रहा है। वह केवल निर्वासन में रहने वाले लेखक को ऐतिहासिक संदर्भ दे रहा है और वह लेखक इज़राइल के इतिहास का इस तरह से प्रतिनिधित्व कर रहा है कि जैसे उसने इतिहास लिखा था, इज़राइल के इतिहास के पाठ्यक्रम को निर्धारित करने में ईश्वर के वचन की प्रमुख भूमिका और कार्य थी। लेकिन यह एक स्वीकृत इतिहास है; यह एक धार्मिक निर्माण है। वह उस अर्थ में किसी ऐसी चीज़ के बारे में बात नहीं कर रहा है जो वास्तव में घटित हुई थी।

डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया